Vol 3 Issue 10 Nov 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-10, Nov-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में प्रेम का स्वरूप

अनुज कुमार तरुण
तदर्थ सहायक प्रवक्ताहिन्दी विभाग शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश :प्रेम हृदय की अत्यंत सूक्ष्म वृत्ति एवं सृष्टि की चिरंतन आदि शक्ति हैं। मानव जीवन में प्रेम की व्यापकता को सभी दृष्टियों से स्वीकार किया गया है। साहित्य में भी संसार के प्रायः सभी रचनाकारों ने प्रेम को ही सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है और यदि कहा जाय कि 'प्रेम' कविता की सबसे महान प्रेरक शक्ति है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। परन्तु देश और काल की परिस्थितियों के अनुसार प्रेम के रूपों में और अर्थ में परिवर्तन होते रहे हैं तथा प्रेम का महत्व आज भी उतना ही है, जितना कि प्राचीनकाल में था।

प्रस्तावना :

प्रेम को परिभाषित करना जीवन को परिभाषा में बांधने के सदृश ही दुष्कर कार्य है। वस्तुतः संसार में जो कुछ सुन्दर है, जो कुछ अच्छा लगता है, उसके मूल में प्रेम भावना विद्यमान होती है। वर्ड्स्वर्थ का भी मानना है कि–'प्रेम सुन्दर' को सुन्दरतम् बनाता है।'' नैसर्गिक या मूल वृत्तियों की बात करने वाले मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि प्रेम एक सुपरिभाषित व्यवहार है जो स्त्री–पुरूष के बीच एक विशेष उद्दीपन की प्रतिक्रिया में पैदा होता है और उसका लक्ष्य सभोग होता है। दूसरी तरफ आत्मा–परमात्मा की बात करने वाले अध्यात्मवादी मानते है कि प्रेम कोई दैहिक (अर्थात् लौकिक) या भौतिक चीज नहीं, बल्कि आत्मा में बसने वाली कोई चीज हैं। इससे जाहिर हैं कि प्रेम कोई निश्चित और सर्वथा स्पष्ट चीज नहीं है और प्रेम की अवधारणा न तो शाश्वत है और न ही सदा एक सी रहने वाली। प्रेम के विविध अर्थ हो सकते हैं और बदलते भी रहते है।

हिन्दी साहित्य में भी प्रेम का स्वरूप निश्चित नहीं रह सका है। आदिकाल से आज तक प्रेम की अवधारणा और स्वरूप परिवेश के अनुसार बदलता रहा है।

सन् 1936 के आस–पास हिन्दी साहित्य क्षेत्र में एक नई सामाजिक चेतना का उदय हुआ जिसे समाजवादी चेतना कहा गया और जिसका आधार मार्क्स का द्वान्द्वात्मक भौतिकवाद था। सन् 1936 में प्रगतिशील लेखकर संघ के प्रथम अधिवेशन में प्रेमचन्द ने अपने संबोधन में कहा था, कि–

''हमारी कसौटी पर वही साहित्य पूरा उतरेगा, जिसमेंउच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य कासार हो, सृजन की प्रेरणा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो जो हममें गति और संघर्ष, बेचैनी पैदाकरे, सुलाए नही, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।''

जैसा कि मार्क्स का कहना है कि 'सौंदर्य–चेतना भिन्न भिन्न वर्गो में भिन्न–भिन्न प्रकार की होती है। जो शोषक वर्ग है उसकी सौंदर्य चेतना श्रमिक और शोषित वर्ग की सौंदर्य–चेतना से भिन्न होगी, क्योंकि सौंदर्य–चेतना भी अनिवार्यतः वर्ग संघर्ष से प्रभावित होती है।' इस नयी साहित्यिक चेतना ने नये सौंदर्य–बोध को जन्म दिया। यह सौंदर्य बोध वर्ग विभक्त समाज की विषमता को अस्वीकार करता है, और श्रम की रचनात्मकता को स्वीकार करते हुए उसको चित्रित करता है। नामवर सिंह लिखते है–

''इसके फलस्वरूप कविता में पहली बार किसानों–विशेषतः मजदूरों के गंदे पैरों की पवित्रधूल दिखाई पड़ी। संध्या के झुटपुट में पंत जी को चिड़ियों के टी–वी–टी–टूट–टूट के साथ ही डगमग–डग घर का मग मापते हुए कुछ श्रमजीवी दिखाई पड़ गये और फिर टीले पर उन्हीं के नंगे तन गदबदे बदन वाले लड़के भी आ गये। कविता में पहली बार इतनी व्यापक सहानुभूति का प्रवेश हुआ... और साहित्य का क्षेत्र व्यापकबना दिया और उसमें की नैतिकता प्रतिष्ठिता कर दी।''

इस कविता में नैतिकता, मूल्यवत्ता और सौंदर्य तीनों का आधार श्रम है। इसी रूप में इस कविता ने प्रेम को व्यापक मनोभाव के रूप में ग्रहण करते हुए, प्रेम को व्यापक मनोभाव के रूप में ग्रहण करते हुए, प्रेम को सामाजिक–चेतना से युक्त किया है, और उसमे संघर्ष एवं श्रम का विशेष महत्त्व स्वीकार किया है। इस कविता में नारी का केवल बाहय–सौंदर्य ही आकर्षित नहीं करता, अपितु नारी का आन्तरिक–सौंदर्य कवि को विशेष रूप से प्रिय लगता हैं। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में निराला ने श्रमशील नारी के सौंदर्य का चित्रण किया है। श्रमशील नारी का यह नवीन सौंदर्य–बोध रीतिकालीन सौंदर्य–बोध का विरोधी है। इसी प्रकार डा. राम विलास शर्मा खेत में पानी देती हुई युवती में सौंदर्य देखते है–

''बीच खेत में सहसा उठकर/खड़ी हुई वह युवती सुन्दर/लगा रही थी पानी झुककर/सीधी करे कमर वह पलभर/खड़ी हो गई सहसा उठकर/घेरे उसे जहाँ दल के दल/उठते है कुहरे के बादल''(रूप तंरग)

त्रिलोचन भी खेत में पानी देने वाले प्राणियों में सौंदर्य को देखते है–

''मिलकर वे दोनों प्राणी
दे रहे खेत में पानी''

यह प्रेम रूप–लिप्सा पर आधारित न होकर साहचर्य तथा श्रम पर आधारित है। प्रगतिवादियों का प्रेम एकान्तिक न होकर व्यापक है। उसका प्रेम समाज, परिवार और अपने–अपने आस–पास के परिवेश से जुड़ा होने के कारण अधिक स्वस्थ और जीवंत मालूम पड़ता है।

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। केदार सन् 1930 से भी पहले से कविताएँ लिख रहे थे। इनके पहले काव्य–संग्रह 'नींद के बादल में इनकी प्रेम–संबंधी कविताएँ संकलित है।' नींद के बादल की भूमिका में कवि ने स्वयं कहा है–

''नींद के बादल' रात के जादू के बाद दिन के लालसवेरे के साथ ही ओझल हो जाते है। इस प्रकार मेरे नये सवेरे के साथ प्रेम की इस संग्रह की कविताओं की इति हो जाती है।''

सन् 1938 के आसपास केदार की चेतना मार्क्सवाद से प्रभावित हुई और इस नये सवेरे का नया प्रकाश 'युग की गंगा' में दिखाई पड़ा। केदार ने स्वयं को भारतेन्दु और निराला की परम्परा से जोड़ते हुए घोषणा के स्वर में कहा–

''अब हिन्दी की कविता न रस की प्यासी है, न अलंकार की इच्छुक है और न संगीत की तुकांतपदावली की भूखी है। भगवान अब उनके लिए व्यर्थ है। आज जिसके कि राजा शासक है, पूंजीपति शोषक हैं। अब वह चाहती है–किसान की वाणी, मजदूर की वाणी और जन–जन की वाणी।''

यही किसान व मजदूर केदार जी की प्रगतिशीलता का मूल आधार हैं। इसी आधार पर उनके काव्य में कल्पना के स्थान पर ठोस वास्तविकता और वैयक्तिकता के स्थान पर सामाजिकता मिलती है। यह वास्तविकता और सामाजिकता उन्होंने मार्क्सवाद से अर्जित की है। इसे स्वीकारते हुए कहते है–'मेरे लिए मार्क्सवाद दृढ़तम जीवन का दर्शन है।'

मार्क्सवाद और प्रगतिवाद से प्रभावित होने के कारण केदारनाथ अग्रवाल की दृष्टि में केवल नारी के प्रति आकर्षण ही 'प्रेम' नही है, अपितु इन्होंने प्रकृति, देश, देशवासी, राष्ट्र एवं विश्व को प्रगतिवाद के अनुरूप प्रेम की कोटि में लिया है। केदार के काव्य में 'प्रेम' के विभिन्न रूपों में हम इस प्रकार देख सकते हैं–

प्रगतिवादी कवियों के संबंध में प्रायः कहा जाता है कि प्रगतिशील कवि केवल रोटी और क्रांति की ही बात करते है। प्रकृति के सौंदर्य से उन्हें प्रेम नहीं है और मानव हृदय की रसभरी कोमल भावनाएं इन्हें छू भी नहीं सकती। किन्तु केदार के संबंध में यह आरोप निराधार है। वे प्रेम और सौंदर्य के कवि है। वे प्रकृति को मानवीय रूप ही प्रदान नही करते अपितु उसमें मानवीय क्रियाएँ भी समाविष्ट कर देते है। प्रकृति को एक बोध और मूल्य में सक्रिय कर देते है। प्रकृति की यह सक्रियता और सकर्मकता प्रगतिशील मूल्यों पर आधारित है, और यह सक्रियता श्रम और सौंदर्य दोनों प्रकार के चित्रण में देखी जा सकती है। प्रकृति कवि को

आकर्षित करती है और उस का पुष्पदेश कवि को बेसुध कर देता है–
'झाड़ी के एक खिले फूल ने/नीली पंखुरियों के/एक खिले फूल ने/आज मुझे काट लिया/ओंठ से/और अचेत रहा/धूप में/''

यहाँ प्रकृति भी मानव समान आचरण करती हुई दिखाई देती है। जिस प्रकार प्रिया का सौंदर्य कवि को बेहोश कर देती है, उसी प्रकार इस फूल के सौंदर्य ने कवि को बेहोश कर दिया है। नारी के विभिन्न अंगों की उपमा प्रकृति के विभिन्न उपादानों से दी जा रही है। इसी प्रकार 'बसंती हवा' के माध्यम से केदार ने गाँव की अल्हड़ किशोरी का मस्ती भरा रूप चित्रित किया है। वह स्वयं तो अल्हड़ और मस्त है ही, साथ ही जिसे भी देखती है, उसे अपने जैसा बना लेती है। उसके उल्लास से समस्त प्रकृति उल्लासमयी हो गई है। उसकी हँसी से ऐसा लगता है मानों सारी सृष्टि हँस रही है। यहाँ गाँव की प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है–
'चढ़ी पेड़ महुआ/थपाथप मचाया/गिरी धम्म से फिर/चढ़ी आम ऊपर/उसे भी झकोरा/किया कान में 'कूं'/उतर कर भागी/मैं हरे खेत पहुँती।''

केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति की शालीनता को तोड़ना या भंग नहीं करना चाहते है। यह वैसे ही है, जैसे सच्चा प्रेमी अपनी मन की भवनाओं पर काबू करके अपनी प्रेमिका की शालीनता को बनाये रखता है–

''आज नदी बिल्कुल उदास थी/सोयी थी अपने पाने में/
उसके दर्पण पर/बादल का वस्त्र पड़ा था/मैंने
उसको नहीं जगाया/दबे पाँव घर वापस आया।''

इस प्रेम में नायक–नायिका के पुराने संबंध बदल गये हैं। दोनों एक–दूसरे के सम्मान की रक्षा करते है। यह एक नये प्रगतिशील भावबोध का स्वरूप है। यहाँ प्रेम में एक नई नैतिकता का अनुभव मिलता है। प्रेम व्यक्ति में उन्माद नहीं जगाता अपितु उसे संयमी भी बनाता हैं। नायक–नायिका नदी की उदास मनःस्थिति को देखकर बिना जागए दबे पाँव वापस लौट आता है। इससे भिन्न स्थिति 'निराला' की 'जूही की कली' में है–

''निर्दय उस नायक ने/निपट निठुराई थी/कि झोकों की झाड़ियों से/सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली/ मसल दिये गोरे कपोल गोल...।''

किन्तु दोनों कविताओं में अन्तर यह है कि केदार की कविता में नदी उदास है जबकि 'जूही की कली' मतवाले यौवन की मदिरा पिये थी। केदार का नायक नदी को बिना जगाए ही दबे पाँव लौट आता है। सौंदर्य ही उसे तृप्त कर देता है, शरीर स्पर्श की आकांक्षा उसके भीतर नहीं जागती। यह प्रेम 'फ्रायड' के कुत्सा प्रेम नहीं है बल्कि प्रेमी–प्रेमिका का वासना मुक्त और समर्पित प्रेम है।

यही नहीं केदार ने मनुष्य और प्रकृति के संयोजन का पूरा ध्यान दिया है अर्थात् केदार के यहाँ मानव तथा प्रकृति एकमेव हो गए है। केदार को मानव श्रम की मूल्यता का गहरा बोध है। 'तेजधार का कर्मठ पानी' में प्रकृति का यह संघर्ष मानवीय–संघर्ष की गति और शक्ति प्रदान करता है। पानी की कठोरता कर्मठ होकर चट्टान की कठोरता को तोड़ रही है। कर्मठ पानी को कवि ने उस श्रमिक के रूप में चित्रित किया है, जो जड़ी भूट व्यवस्था पर प्रहार कर एक नये युग का निर्माण करने में सफल होगा। प्रकृति के माध्यम से केदार जी ने एक नया मनुष्य गढ़ा है।

केदार जी श्रमिक जनता की, उसकी सजग कर्मशक्ति को इतना प्यार करते है कि वह उनके विश्वास का ही नहीं, सौंदर्य–बोध का भी दृढ़ आधार बन गया है–

''छेटे हाथ/सवेरा होते/लाल कमल से खिल उठते है/
करनी करने को उत्सुक हो/धूप हवा में खिल उठते है।''

आज तक केवल प्रिया के हाथों की सुन्दरता की तुलना ही कमल से की जाती रही है, श्रम करने वाले हाथों को इतने सुन्दर रूप में संसार के बहुत कमसे कवियों ने देखा है। केदार प्रकृति के अप्रतिम सौंदर्य, उल्लास के बीच मानवीय श्रम और संघर्ष के अहसास को बराबर जीवित करते चलते हैं। डा. राजकुमार शर्मा के अनुसार –''प्रकृति के सौंदर्य से जीवन संघर्ष की शक्ति और प्रेरणा पाने की उनकी कोशिश ठीक वैसी ही है, जैसे नेरूदा, त्रिलोचन और नागार्जुन में है।''

केदारनाथ अग्रवाल ने प्रकृति के मध्य से नारी का भी चित्रण किया है। नारी के शरीर में केदार मानव–जीवन की सार्थकता देखते है। नारी शरीर वस्तुतः मानवीय चेतना के रूप में विभिन्न मुद्राओं का कई स्थानों पर अकुण्ठ एवं मुक्त रूप से चित्रण किया है। किन्तु यहाँ केदर जी ने मूर्तिकला एवं चित्रकला को माध्यम के रूप में अपनाया है, जो कि उदात्तता प्रदान करते है। पिकासो के चित्र देखकर–

सम्भोग की मुद्रा में/नग्न खड़े है/खुले आम नर और नारी/एक दूसरे में लिप्त/परदा तोड़े नये युग में/नयी सन्तान/पैदा करने के लिए।''

'फूल नही रंग बोलते हैं' कृति में खजुराहों के मंदिर का चित्रण इसी तरह किया है। वस्तुतः देश–काल सापेक्ष ऐतिहासिकता में देखने के नाते ही प्रेम केदार की कविताओं में सहज स्वस्थ व मानवीय मूल्य के रूप में अकुण्ठ भाव में व्यक्त हुआ हैं। यह सम्भवतः सबसे 'प्रकृत' चित्रण हैं यह प्रेम वासनात्मक न होकर सर्जनात्मक है। नये युग में नयी सन्तान पैदा करने के उद्देश्य से वह जीवन की सहज और स्वस्थ वृत्ति है।

आलोचकों का मानना है कि प्रगतिवाद के कवियों पर फ्रायड का प्रभाव है, जिसके कारण प्रगतिशील कविता में संयम, दमन, और गोपन के स्थान पर 'प्रकृत' अभिव्यक्ति का आग्रह उत्पन्न हो गया हैं इसमें संदेह नहीं है कि प्रगतिशील काव्य में अनावश्यक गोपन की प्रवृत्ति नहीं है। 'खजुराहों के मंदिर' में और पिकासो की चित्रशाला में यह परदा टूटा है किन्तु वह भी फ्रायड के कुत्सा प्रेम को धारण करने के लिए नही, स्त्री–पुरूष संबंधो के पवित्र सार्वलौकिक स्वरूप की शक्ति व्यंजति करने के लिए। और केदार के इन पंक्तियों में कि–

''मैं गया हूँ डूब/इतना डूब/तेरे बाहुओं में/लोचन में/कुंतसों में/गिरि गया है डूब/जितना/ सिन्धु में सम्पूर्ण/सदियों पूर्व/और अब भी/मग्न है बेऊब।''

इस कविता में संयम और गोपन की प्रवृत्ति है इसलिए यह प्रकृत अभिव्यक्ति नहीं हुई। फ्रायड के प्रभाव के लिए काम की कुण्ठा और अभिव्यक्ति का संयम–गोपन रहित होना दोनो आवश्यक है। अतः केदारनाथ अग्रवाल पर फ्रायड का प्रभाव नहीं माना जा सकता। ना ही छायावादी कवि की भाँति प्रेम की काम वासनाओं को अशरीरी, अतीन्द्रीय तथा प्रतीकात्मक रूप देने का प्रयास माना जा सकता है।

केदार नर–नारी के संबंधो को 'काम लिप्सा' से जुड़ा हुआ नहीं मानते है वह इसे एक सहज आकर्षण के रूप में देखते है। उसकी अभिव्यक्ति भी स्वभाविक रूप में करी है–

''प्रिय न ऐसा करना
अंगूरी–यौवन का मद उषा में भरना
मैं पी लूंगा, हंसना मुझकों प्रियतम कहना।'

केदार ने भले ही अपने काव्य–जीवन का प्रारंभ प्रेम और श्रृंगार के रोमानी कवि के रूप में किया है। किन्तु कवि ने इन कविताओं में न तो अति–विलासी नग्न रूप ग्रहण किया न ही वह यौन कुंठाओं का शिकार हुआ है। केदार के यहाँ प्रेम एक वस्तुगत सामाजिक सत्ता है। अपनी इस विशेषताओं को लेकर ही वह उनकी कविताओं में व्यक्त हुआ है। इनकी कविताएँ न तो आह भरने वाली कविताएँ है और न प्रेम के बहाने अश्लील अंग वर्णन और कामशास्त्र रचनेवाली कविताएं। केदार का इन्द्रिय–बोध काफी तीक्ष्ण है, इंन्द्रियों के माध्यम से सौंदर्य–ग्रहण को वे सबसे महत्व देते है। प्रेम अमर है तो वह देह के माध्यम से व्यक्त होना चाहिए और सौंदर्य अगर है तो वह पता भी चलना चाहिए। केदर का तीव्र और सूक्ष्म इंद्रिय बोध ही उन्हें ऐसे चित्र प्रस्तुत करने में सहायता देता है–

''टहल जाओ इस तरह मेरे हृदय पर
टहल जायेधूप जैसे चम्पई सुकुमार।''

केदार गृहस्थ प्रेम के कवि हैं। उन्होंने अपनी पत्नी को आलंबन बनाकर ही काव्य–रचना की है। यही नहीं पत्नी के देहांत के बाद इन्होंने अपनी पत्नी को अपनी कविता का आलंबन बनाया है। निसंदेह इसी के सहारे तो मनुष्य शरीरिकता से भी ऊपर उठता हैं। केदार के यहाँ प्रिय की स्मृति प्रकृति के माध्यम से बहुत कमसे व्यक्त हुई है–

''हे मेरी तुम/आज धूप जैसे ही आयी/
और दुपट्टा/उसने मेरी छाती पर रक्खा
मैंने समझा तुम आई हो/दौड़ा मैं तुमसे मिलने को।''

केदार कहते है–

''मूलतः मैं पत्नी प्रेमी रहा हूँ और मेरी प्रेम की कविताएँ उन्हीं के प्रेम और सौंदर्य की कविताएँ है।''

पर वह केवल पत्नी प्रेम तक ही सीमित नहीं है। उनका अपना एक व्यापक संसार है। उनकी दृष्टि में उस प्रेम का कोई महत्व नहीं है जो कि व्यक्ति को मनुष्य व समाज सभी से अलग कर दे, बल्कि प्रेम तो मनुष्य को आदमीयत की पहचान कराता है। उसे सत्–असत् के मध्य भेद करने की बुद्धि देता है। उसे सही

अर्थो में जीने का ज्ञान प्रदान करता है। उनका प्रेम व्यक्ति के भीतर ज्ञान की लौ जागृत करता है, यथा–

''प्रेम में घुमा हुआ/जानवर से आदमी हुआ/
पथराया दिल/कुमुद हुआ।''
प्रेम की लौ से जागृत वह ज्ञान ही है जो मनुष्य को सामाजिक बनाता है। वह खुद मानते है कि–
''मैं कविता में उदात्त का विरोधी नहीं हूँ, सहज साधारण का पक्ष पाती हूँ।''

स्पष्ट है कि केदार जन–साधारण के पक्ष पाती है। इसीलिए कविता को जनसाधारण की वस्तु मानते हुए उसमें जनसाधारण को ही विशेष स्थान देते हैं। केदार जिस जीवन से प्रेम करते है, वह भारतीय जन का जीवन है, अर्थात् इस देश के किसानों मजदूरों और शहरी–निम्न मध्यवर्ग के लोगों का जीवन है। यह जीवन इतिहास के एक खास दौर से गुजर रहा है जो कि पूंजीवादी व्यवस्था का संकटपूर्ण दौर है। केदार इस जीवन को निकट से देखते है और अपनी कविताओं में अनेक प्रकार से उसका चित्रण करते है। कहीं उनके भीतर के उल्लास को अभिव्यक्त किया है तो कही उनकी विषय स्थितियों को।

उनकी कविताएँ आदमी की आदमीयता की कविताएं हैं। निरंतर अमानवीय होती हुई, इस व्यवस्था में केदार की मानवीय आस्था हमें जीवन के प्रति आश्वस्त करती है। तभी तो केदार श्रमिकों को जागृत कर रहे है–

''आदमी ने ईश्वर को अपना सर्वस्व दिया
ईश्वर ने आदमी को नहीं दिया एक वस्तु
आदमी का प्यारा पुत्र ईश्वर है
ईश्वर का पुत्र नहीं आदमी है।''

उनकी कविता में मजदूर और किसानों के जितने भी चित्र अंकित है, वे उनकी मानवीय आस्था को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं। निस्संदेह केदार की कविता इस बेहद मानवीय संसार में आदमी और आस्था की खोज की कविता है–

''मैं उसे खोजता हूँ/जो आदमी है/
और/अब भी आदमी है/तबाह होकर
भी आदमी है।''

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भक्तिकाल से जिस मानव प्रेम की खोज शुरू हुयी थी। वह द्विवेदी युग में परिपक्व होती हुई छायावाद में नयी परिणति पाती है। जिसकी एक धारा द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के युग में भी बरकरार रही। केदारनाथ अग्रवाल की कविता भी वक्त के हिंडोले में झूलती इसी परिपक्वता व परिणति का ही एक रूप है। उनकी रचनाएँ जहाँ एक ओर भक्तिकाल की मानवीय ओजस्विता से लबालब है, वहीं दूसरी ओर छायावादी कोमल भावनाओं से अभिप्रेरित है। उनकी कविताओं की यही अभिप्रेरणा उनकी कविता की शक्ति है। जिसे वह अपने युग के सच को अभिव्यक्त करने के लिए प्रयोग करते है। प्रयोग की यह दृष्टि ही उन्हें प्रेमी बनाता है। इसीलिए उनकी कविताओं में केवल परम्परागत प्रेम ही स्थान नहीं पाता बल्कि आधुनिक प्रेम की विभिन्न मनःस्थितियों भी दिखाई पड़ती है।

सहायक ग्रंथ–सूची

1.आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2.प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल – डा. रामविलास शर्मा परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
3.राग–विराग – सं. रामविलास शर्मा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
4.प्रगतिशील कविता के मील–पत्थर – सं. डा. रणजीत लोकभारती, प्रकाशन, इलाहाबाद
5.रूपतंरग– डा. राम विलास शर्मा विनोद प्रकाशन मंदिर, आगरा
6.केदारनाथ अग्रवाल – सं. प्रो. अजय तिवारी, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
7.प्रगतिशील कविता के सौंदर्य–मूल्य – प्रो. अजय तिवारी
8.हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी लोकभारती प्रकाशन
9.पूफल नहीं रंग बोलते है – केदारनाथ अग्रवाल, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
10.गुलमेंहदी– केदारनाथ अग्रवाल, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
11.मार प्यार की थापें – केदारनाथ अग्रवाल, परिमल प्रकाशन
12.हे मेरी तुम – केदारनाथ अग्रवाल परिमल प्रकाशन

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net